गौ–शालाओं में बीमारियों पर नियंत्रण ऐसे पायें

डा0 रामस्वरूप सिंह चौहान
संयुक्त निदेशक, कैडराड
भारतीय पशु–चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर

गौ भारत की राष्ट्रीय समृद्धि और सम्पदा की विशिष्ट प्रतीक रही है। तपोवन संस्कृति की यह महत्वपूर्ण अंग थी। ग्रहस्थों की ही नहीं वरन् आश्रम में रहने वाले ऋषियों की समृद्धि का परिचय भी यहां रहने वाली गौओं की संख्या से मिलता था। धर्म और संस्कृति की प्रतीक होने के साथ–साथ गाय भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था की भी मेरूदण्ड है। हमारे देश में गोवंश की 26 नस्लें हैं जिनकी उपयोगिता दूध तथा भार ढ़ोने के रूप में प्राचीन काल से ही सिद्ध हो चुकी है। मगर दुर्भाग्य यह रहा कि पिछले 40 वर्षो में संकरीकरण के अन्धाधुन्ध प्रयोग से हम अपनी अच्छी नस्ल की गायों को खोते चले गये। गाय से प्राप्त दूध को ही आय का आधार मानकर इसकी उपयोगिता होने लगी व जो गायें दूध कम देने वाली हैं या दोब्यांत के बीच का अन्तराल बिना दूध के होने वाला है ऐसी गायों को अर्थहीन मानकर उनको फार्म से अलग किया जाने लगा। कई बार तो ऐसा भी देखा गया कि गाय को आर्थिक रूप से बोझ समझकर ऐसे ही चरने को छोड़ दिया गया। इसी के साथ–2 इन्हे सस्ते में बेचकर इनके हाल पर छोड़ दिया। फलस्वरूप कुछ गौ–शालाओं/ गौसदन अस्तित्व में आये जिन्होने इस प्रकार की गायों की सेवा करने का बीड़ा उठाया। मगर बेचारी गाय को यहां भी कष्टों से निजात नहीं मिली। गौशालाओं/ गौसदनों का आकार वहां रखी जाने वाली गायों की संख्या से छोटा पड़ने लगा है। अधिक गायें कम स्थान में रखी जाने में उनमें बीमारियां व अन्य समस्याऐं भी पैदा हुई है। गौशालाओं में स्वच्छता का अभाव रहा है। स्वस्थ्य के लिए पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। कुछ लालची किस्म के लोगों ने यहां भी व्यवसाय बना लिया व गौर के नाम पर मोटी रकम के चंदे या सरकारी सहायता का गाय के लिए उपयोग न कर अपने स्वार्थ में प्रयोग करने लगे। मगर आशा की किरण कुछ गौशालाओं ने दिखायी। जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि गाय से प्राप्त गौबर व गोमूत्र उससे भी कहीं अधिक उपयोगी व आर्थिक रूप से समृद्धि देने वाला है।

गौशालाओं व गौसदनों में गायों को रखने की व्यवस्था कैसी हो, उनके स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रखा जाये, आदि बिन्दुओं पर प्रस्तुत लेख में प्रकाश डाला जा रहा है। पिछले दिनों समाचार पत्रों में छपी एक समाचार ने यह लेख लिखने को प्रेरित किया जिसके अनुसार पिछले डेढ़ साल में 18 हजार से अधिक गायों की मौत दिल्ली के गौसदनों में हुई है जिसकी जाँच दिल्ली के माननीय उच्च न्यायालय द्वारा की जा रही है। यह चिन्ता का विषय है। इसी को ध्यान में रखते हुए गौशाला प्रबन्धन, स्वस्थ्य आदि की जानकारी दी जा रही है। यह चिन्ता का विषय है। इसी को ध्यान में रखते हुए गौशाला प्रबन्धन, स्वास्थ्य आदि की जानकारी दी जा रही है।

गौशाला का तापमान :

गौशालाओं का तापमान अधिक नहीं रहना चाहिए। इसके लिए अच्छे आवास की व्यवस्था हो। यदि खुला स्थान है तो वहां वृक्ष होने चाहिए जिनकी छाया में गायें रह सकें। अन्यथा छप्पर/एसबैस्टस/ पक्की छत से ढका आवास बनवाना चाहिए। सामान्यतः 45–50^0 फारेनहाइट तापमान गायों के अच्छे रहने के लिए अच्छा उत्पादन भी देती है। देसी गायें अधिक तापमान भी अच्छी तरह झेल लेती हैं अगर संकट/ विदेशी नस्ल की गायों की उत्पादन कम हो जाता है व बीमार भी हो जाती हैं।

गोशाला में वायु : गायों को शुद्ध वायु मिलना अत्यन्त आवश्यक है। सामान्यतः गौशाला में 3452 घनफुट वायु प्रवाह प्रति घंटा रहना चाहिए। जिसमें कार्वनडाइ आक्साइड 5.8 घनफुट से अधिक न हो। सामान्यतः यह सुनिश्चित कर लें

कि गौशाला में प्रवेश करते समय दम न घुटे वह सांस लेने में तकलीफ न हो। आम तौर पर गौशालाओं हवादार या खुली रहती है फिर भी इस बात का ध्यान रखे कि गोबर व मूत्र की सफाई समय–2 पर होती रहे जिससे वातावरण में खराव गैस एकत्रित न रहने पायें व गायों की स्वच्छ हवा मिलती रहे। यदि गायें बन्द कमरों में रखी गयी हैं तो उनमें रोशनदान व खिड़की होना आवश्यक है अन्यथा अन्दर स्वच्छ हवा नहीं रह पायेगी। अतः इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि गायों को स्वच्छ हवा हमेशा मौसमों में मिलती रहे।

गोशाला में प्रकाश व्यवस्था :

प्रकाश की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि प्रत्येक गाय को पर्याप्त प्रकाश मिले। यदि बन्द कमरे हैं तो रोशनदान , खिडकी, दरवाजे ऐसे हों जिनसे धूप व प्रकाश अन्दर आता रहे। सबसे अच्छा तो यह रहता है कि गौशाला में छाया व प्रकाश (खुला स्थान) बराबर ही रहता चाहिए ताकि गायें कभी छाया में अन्दर व कभी बाहर खुले स्थान में रह सकें। प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था होने पर उस स्थान की स्वच्छता भी बनी रहती है। पर्याप्त प्रकाश के अभाव में कई बार गाय चारा–दाना भी ठीक से नहीं खा पाती।

गोशालाओं में चारे–दाने की व्यवस्थाः

गोशाला में गायों की संख्या के अनुसार चारे दाने की व्यवस्था रहनी चाहिए। गायों को पेट भरकर पर्याप्त चारा मिलने से ही कई प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है। दुर्भाग्य से अक्सर यह देखा गया है कि गौशाला में गायों की संख्या अधिक है व पर्याप्त चारे–दाने की व्यवस्था नहीं है। अधिकांश गायें भूखी रहती है व उन्हें भरपेट चारा ही नसीब नहीं हो पाता। अतः इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। यहां एक सारिणी के माध्यम से चारे–दाने की गोवंश की आवश्यकता दी जा रही है। इसमें यदि कभी हरा चारा रहता है या दाना उपलब्ध नहीं हो पाता तो कम से कम सूखा चारा तो अवश्य मिलना चाहिए। यहां यह ध्यान रखें कि यदि किसी भी कारण से इसमें से कोई एक उपलब्ध नहीं है तो उसकी भरपाई दूसरे अवयव से करने की चेष्टा करें। साथ ही इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी कारण से इसमें से कोई एक उपलब्ध नहीं है तो उसकी भरपाई दूसरे अवयव से करने की चेष्टा करें। साथ ही इस बात का ध्यान रखें कि गायें भूखी न रहने पायें। अक्सर गायों की मौत भूखी रहने से ही होती है। जहां चारागाहों की व्यवस्था है वहां गायों को चराकर उनका पेट भरा जा सकता है। नीचे की सारणी में गोवंश के प्रत्येक वर्ग के हिसाव से चारा दाना की मात्रा दी जा रही है। गाभिन और दूध देने वाली गाय को हरे चारे की अनुपलब्धता होने पर विटामिन ए अलग से दें।

गोवंश की चारे–दाने की दैनिक आवश्यकता

क्रम संख्या	गोवंश	सूखा चारा कि0ग्रा0	हरा चारा कि0ग्रा0	दाना कि0ग्रा0
1.	बछडे/ ओसर बछड़ो	3 – 5	5 – 20	0.250–0.500
2.	ग्याभिन बछड़ी	4 – 6	20 – 25	0.500–1.0
3.	गर्भावस्था के प्रथम तीन महीने	4 – 6	20 – 25	1.0–1.500
4.	गर्भावस्था के द्वितीय तीन महीने	4 – 6	20 – 25	1.500–2.0
5.	गर्भावस्था के अन्तिम तीन महीने	5 – 6	20 – 25	1.500–2.0
6.	प्रजनन हेतु साँड	6 – 9	20 – 25	2.0–2.500
7.	दूध देने वाली गाय	5 – 6	20 – 25	1.500–2.0

	(5 लीटर तक)			
8.	दूध देने वाली गाय (10 लीटर तक)	6 – 8	20 – 25	3.00–3.500
9.	दूध देने वाली गाय (15 लीटर तक)	6 – 8	35 – 40	5.00–6.00

गौशालाओं में नांद कठोर, अपारगम्य तथा अम्ल एवं क्षार रोधी होनी चाहिए जिससे कि चारे–दाने के अवयव उससे बाहर रिसकर न जायें तथा इसकी सफाई रोजाना अवश्य होनी चाहिए। कई बार ऐसा देखा गया है कि चारा डालते समय नांद में कूड़ा–करकट/ कीड़े मकोड़ो पड़े रहते हैं। अतः नांद की अच्छी तरह सफाई करें फिर उसमें चारा–दाना डालें। विभिन्न रोगों से बचाव के लिए यह टीकाकरण कार्यक्रम अपनाने का प्रयत्न करें।

क्रम संख्या	आयु/ गोवंश वर्ग	टीका
1.	बछड़े/बछड़िया 5–6 महीने की आयु	खुरपका मुँह पका का टीका ।
2.	बछड़े/बछड़िया 6–7 महीने की आयु	गलघोटू का टीका ।
3.	बछड़े/बछड़िया 9–10 महीने की आयु	खुरपका मुँह पका का टीका ।।
4.	बछड़े/बछड़िया 1 वर्ष की आयु	1. गलघोंटू का दूसरा टीका 2. लंगडी ज्वर की टीका वर्षा से 3. पहले ब्रुसैलोसिस का टीका
5.	प्रति 6 महीने पर	खुरपका मुँहपका का टीका
6.	प्रतिवर्ष	1. गलघोंटू का टीका, वर्षा से पहले 2. लंगडी ज्वर का टीका

एक वर्ष का कार्यक्रम : कब, क्या और कैसे करें।

1. जनवरी – फरवरी में : जनवरी, फरवरी मासों में ठन्ड अधिक पड़ती है। अतः गोवंश को ठन्ड से बचायें। अत्याधिक ठन्ड से गाय के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसके लिए गोवंश को छाये। ढके स्थान पर रखें, रात में अलाव जला सकते है या गोवंश के ऊपर कपड़ा/ कम्बल डाल सकते है। इस समय विशेष रूप से बनायी गयी झूलों का प्रयोग किया जा सकता है। गोवंश को भीगने से बचायें विशेष रूप से छोटे बछड़े/ बछडियों को तथा अधिक उम्र के गोवंश को गौशाला में सीलन न होने दें। चारा व दाना पर्याप्त मात्रा में दें। चारा–दाना पर्याप्त मिलते रहने से गोवंश शरीर में ऊर्जा बनी रहती है। दिन में धूप निकलने पर गोवंश को धूप में अवश्य निकालें व उन्हें कुछ समय धूप में रहने दें। गौशाला में खिडकी, दरवाजों, रोशनदानों को ढक दें जिससे ठन्ड अन्दर न आये मगर दिन में हवा निकालने के लिए उन्हें खोलकर रखें। इस प्रकार यदि गोवंश की सेवा होती रहेगी तो उनमें बीमारी भी कम होगी। यदि फिर भी गाय बीमार पड़ती हैं तो तुरन्त उपचार प्रारम्भ करें व चिकित्सक की सलाह लें।
2. मार्च–अप्रैल में : इस समय ठन्ड में गर्मी का मौसम बदलता है व हवाऐं तेजी से चलती हैं जिससे गायों को बचाना चाहिए। छायादार स्थान की व्यवस्था करना, पर्याप्त, पानी व चारे की व्यवस्था करना तथा प्रारम्भ में ही गर्मी से बचाने की व्यवस्था करना जैसे प्रमुख कार्य हैं। जो इस समय किये जाने चाहिए। इस समय फसल की कटाई होती है अतः चारे–दाने की पर्याप्त व्यवस्था रहती है। यदि गायें चरागाहों में चरने जाती हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि चरते समय अधिक दाना न खा लें। विशेष रूप से गेंहूँ, चना आदि की

कटाई के समय गाय चरते समय काफी मात्रा में दाना खा जाती है जिससे इनमें अफारा हो जाता है। अफारे से बचने के लिए गोवंश को थोडा कम चारा–दाना दें ताकि थोड़ा पेट खाली रहे व गैस निकलने को पर्याप्त जगह रहे। अफारा होने पर पेट खाली रहे व गैस निकलने को पर्याप्त जगह रहे। अफारा होने पर पशु चिकित्सक की सलाह लें व उचित दवाओं (ट्लॉटोसिल/ टिम्पॉल) से उपचार करें। यदि पेट में अत्याधिक गैस हो तो कोख (रूमैन) में छेद कर गैस निकाली जाती है। ताकि पेट में अत्याधिक गैस से फेफड़ों पर दबाव न पड़े। कई बार अफारा जान लेवा भी हो जाता है। अतः ऐसे समय में सावधानी रखनी चाहिए।

3. मई–जून में : मई–जून में गर्मी बहुत पड़ती है अतः गायों को धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। देसी गायें तो अधिक गर्मी सहन कर लेती हैं मगर विदेशी गायें व संकर गायें अधिक गर्मी में बीमार पड़ जाती है उन्हें लू लगना या हटि स्ट्रैस हो जाता है जिससे उनका उत्पादन कम हो जाता है कभी–कभी मर भी जाती हैं। अतः इस से बचने के लिए पंखे/ कूलर या अन्य किसी भी प्रकार की छाया/ ठन्डक का इन्तजाम करना चाहिए। गर्मी से सताये गये गोवंश का तापमान कम हो जाता है, सुस्ती हो जाती है, अधिक गर्मी से सताये गये गोवंश की प्रजनन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। गर्भावस्था के दौरान भ्रूण के विकास व बच्चेदानी पर भी गर्मी का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। व कभी–कभी गर्भपात हो जाता है। गर्मी में हरे चारे का प्रबन्ध रखना चाहिए व गायों को पानी खूब उपलब्ध कराते रहना चाहिए ताकि गर्मी का प्रभाव कम हो जाय। इस मौसम में सांय व प्रातः के समय कीटों का प्रकोप अधिक होता है अतः कीढ़ों को भगाने/ मारने की व्यवस्था करनी चाहिए।

   इस मौसम में गायों में थनैल रोग होने की संभावना रहती है अतः जो गायें दूध नहीं दे रही हैं तथा ब्याने के करीब है उन्हें एन्टीबायोटिक दवा थन में तथा माँस पेशी में सुई द्वारा अवश्य दें यह उपचार कम से कम 5 दिन करें। अन्य बीमारियों से बचाने के लिए गौशालाओं में सफाई कर चूने का छिड़काव करायें। गोवंश को पेट के कोड़े मारने की दवा दें। ग्याभिन गाय में पेट के कीड़े मारने की दवा देते समय सावधानी रखें क्योकिं इससे गर्भपात भी हो सकता है।

   इस समय गोवंश में खुरपका मुँहपका के टीके लगवायें। जो भी गोवंश 6 माह से बड़ा है उनमें सभी में टीके लगने चाहिए। इसी समय गलघोटूं के टीके भी लगवायें उसके बाद लगड़ी ज्वर के टीके लगवायें। ध्यान रखें प्रत्येक टीके में कम से कम 10 दिन का अन्तर हो।

   जुलाई–अगस्त में : इस समय बर्षा प्रारम्भ हो जाती है अतः गोवंश वर्षा के कारण तनाव में व दवाव में आ जाते हैं जिससे दूध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वर्षा से बचने के लिए पर्याप्त आवास की व्यवस्था होनी चाहिए। यदि मई–जून मास में टीकाकरण छूट गया हो तो इस समय वर्षा प्रारम्भ होने से पहले ही टीके लगवा लें। दाने में खनिज लवणों पर ध्यान दें। पीने को साफ पानी दें व गौशाला में व आस पास के क्षेत्रों में पानी न भरने दे अतः पानी की निकासी पर पर्याप्त ध्यान की आवश्यकता है वर्षा में थनैला रोग से बचाने के लिए गायों को दुहते समय थोडे गर्म–कुनकुने पानी से अयन की सफाई करें। इन महीनों में गायें वयाती भी अधिक हैं अतः उनकी समुचित देखभाल रखें। बछडों/ बछडियों का पैदा होते ही नाल किसी तेज धार वाली चीज से काटें व संक्रमणहारी दवाऐं उसमें लगा दें ताकि वह पके नहीं । बछडें/ बछडियों को उनके वजन के अनुसार खीस पिलायें। सामान्यताः यह शरीर भार के दसवें हिस्से के बराबर होता है। इन महीनों में कीटों का भी प्रकोप रहता है अतः कीटों को भगाने/ मारने पर भी ध्यान देना चाहिए।

   सितम्बर–अक्टूबर में : इन महीनों में कीटों का प्रकोप बहुत होता है जिनके काटने से गोपशु तनाव में आ जाते हैं व उनका दूध उत्पादन कम हो जाता है। अतः इन कीटों से बचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। वर्षा का पानी एकत्र होने से कीचड़ हो जाती है। गोपशुओं को कीचड़ में न रहने दें। सूखे स्थान पर रखें, पीने

को साफ पानी दें। पेट के कीड़े मारने की दवा दे सकते है यह ध्यान रहे कि यह दवा हर 6 माह पर देनी है व गाभिन गायों में नहीं देनी है। हरे चारे की व्यवस्था ठीक रखें। इस समय के हरे चारे से 'साइलेज' या 'हे' बना सकते हैं।

नवम्बर– दिसम्बर में : यहां से ठन्ड प्रारम्भ हो जाती है अतः गोपशुओं को ठन्ड से बचाने के प्रबन्ध करने चाहिए। इस समय 10–10 दिन के अंतराल पर खुरपका–मुँहपका, गलघोटूं तथा लंगड़ी ज्वर की टीका लगवाना चाहिए। पिछले महीनों में ब्यायी गायें इस समय गर्मी में आती हैं यदि ब्याने के 20–25 दिन बाद गर्म होती हैं तो उन्हें ग्याभिन करायें। इस समय हरे चारे के साथ–2 भूसे का भी प्रबन्ध करें। गौशाला की सफाई फिनाइल से कराकर चूने का छिड़काव करायें। बीमार गाय को अलग से रखने की व्यवस्था करें। पशु चिकित्सक की सलाह लें।

इस प्रकार यदि गौशाला का प्रबन्धन किया जायेगा तो गायों में बीमारियां भी कम होंगी व उनसे उत्पादन भी अधिक लिया जा सकेगा। विशेष रूप से अपाहिज व बूढ़ी गायों की देख भाल की आवश्यकता है। कई सामाजिक संस्थाऐं भी गायों के लिए कार्य करती है। कई सामाजिक संस्थाऐं भी गायों के लिए कार्य करती हैं। यथासंभव ऐसी संस्थाओं से सहयोग लिया जा सकता है। तथा सभी ऐसी संस्थाओं से सहयोग लिया जा सकता है। तथा सभी गोवंश का वर्ष में एक बार क्षय रोग, जोहनीज रोग व ब्रुसोलोसिस रोग के लिए परीक्षण करा लेना चाहिए। इसके लिए पास के पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें या भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर व राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों से संम्पर्क किया जा सकता है। जो निःशुल्क या रियायती दर पर बहुत ही मामूली धन लेकर सभी गोवंश का परीक्षण करवा सकते है उनमें 4 और बीमारियों यथा ट्राइकोमोनियोसिस, कैम्पाइलो बैक्टीरियोसिस, आई0बी0आर0 तथा बी0वी0डी0 के लिए परीक्षण कराना चाहिए। यदि साँड इन 7 बीमारियों में से किसी एक से भी ग्रसित मिलता है तो उसे प्रजनन हेतु प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

इस प्रकार गोवंश की देख रेख करने पर उनका स्वास्थ्य ठीक व मृत्यु दर काफी बम हो जायेगी व गोशाला भी लाभ में रहेंगी।